सगुना राइस तकनीक

सगुना राइस तकनीक

सगुना राइस तकनीक स्थायी उठाए गए बिस्तरों पर खेती, हल चलने और प्रत्यारोपण के बिना चावल और संबंधित आवर्ती फसलों की खेती की एक अनूठी नई विधि है। यह एक शून्य जुताई एवं संरक्षण कृषि खेती का प्रकार है।

उत्पत्ति

चन्द्रशेखर एच भाट्सालवे वह व्यक्ति है जो सगुना बाग की सफलता की कहानी और एसआरटी (सगुना राइस तकनीक) के विकास के लिए काफी हद तक जिम्मेदार है।

एसआरटी के बारे में इतना खास क्या है?

- जड़ क्षेत्र में पर्याप्त ऑक्सीजन की आपूर्ति
- इष्टतम नमी की स्थिति
- श्रम को 50% तक कम करता है
- 40% तक उत्पादन की लागत में कमी
- हल चलाने के दौरान प्रजनन हानि को रोकें
- ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को रोकता है
- बारिश के अनियमित व्यवहार पर निर्भर नहीं है

महत्वपूर्ण सिद्धांत

- एसआरटी जोर देकर कहते हैं कि धीमी गति से सड़ने के लिए सभी जड़ों और छोटे हिस्से को क्यारी में छोड़ा जाना चाहिए।

- खरपतवारों को खरपतवार और श्रम के साथ नियंत्रित किया जाना चाहिए। खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए कोई खेती नहीं करनी, हल नहीं चलाना और कुदाल नहीं चलाना है।

- इस प्रणाली से फसल 8 से 10 दिन पहले कटाई के लिए तैयार हो जाएगी। इसे ध्यान में रखते हुए फसल का चयन करें ताकि बारिश में कटाई से बचा जा सके |

यह कैसे किया जाता है?

मिट्टी की जुताई करे और क्यारी केवल एक बार बनाये । वही क्यारियां खरीफ सीजन में चावल के बाद विभिन्न आवर्ती फ़सल को विकसित करने के लिए का बार-बार उपयोग की जाएगी।

मिट्टी को रोटवेटर या पावर टिलर के साथ काम करने योग्य बनाये।

चिह्नित लाइनों पर क्यारी बनाने के लिए ट्रैक्टर द्वारा संचालित 'बेड निर्माता' या किसी अन्य माध्यम का उपयोग करे।

नीबू या लकड़ी की राख और रस्सी की मदद से समानांतर रेखाएं 136 सेमी अर्थात 4.5 फीट की दूरी पे बनाये।

उठायी गयी क्यारी पर एसआरटी लोहा फॉर्म के साथ छेद बनाएं।

अनुशंसित विविधता और दूरी के अनुसार वाल सेम या चना, या झाड़ी प्रकार कोपे या चने की दाल के 2 बीज को बोएं।

कृषि विश्वविद्यालय दिशानिर्देशों के अनुसार बीज मे फंगसाइड और / या फायदेमंद सूक्ष्मजीव लागू करे |

सर्वश्रेष्ठ संभव उपलब्ध विधि के साथ खेत की सिंचाई करे। 3 से 4 घंटे बाद खेत में चुनिंदा खरपतवार गोल((ऑक्सीफ्लोर्फेन 23.5% ईसी @ 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के साथ छिड़क दें।

जब फसल कटाई के लिए तैयार हो जाये तो पौधों को जड़ और 2 से 3 इंच तना छोड़कर काट ले।

पिछली फसल की जड़ों को मिट्टी में छोड़ना बहुत ज़रूरी है | अब उसपर ग्लाइफोसेट (15 लीटर पानी + 100 मिलीलीटर ग्लाइफोसेट + समुद्री नमक के 200 ग्राम या यूरिया के 150 ग्राम) कटाई के 2 से 3 दिन बाद छिड़क दें ।

केचुआ क्षय जड़े और पौधों खाते हैं और बदले में वे छेद बनाते हैं जो मिट्टी में आवश्यक वायुमंडल प्रदान करते हैं।

फिर नई फसल फिर से लगाई जा सकती है। ग्रीष्मकालीन मूंग सेम एक ही बिस्तर पर सर्दियों की फसल के बाद लगाया जा सकता है।

प्रभाव

किसान पर प्रभाव

- किसान अपने पेशे के बारे में अधिक आत्मविश्वासी बन जाते हैं।
- खेती के प्रति खो गयी गरिमा को एसआरटी में किए गए विभिन्न व्यवस्थित प्रक्रियाओं के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है |
- किसानों को श्रम की कमी की समस्या से आजादी मिल जाती है।

मिट्टी पर प्रभाव

- पृथ्वी की सतह के नीचे जड़ों को रखने की प्रक्रिया में मिट्टी की सुगंध में सुधार होता है ।
- मिट्टी अधिक उत्पादक बन जाता है।
- मिट्टी की जल धारण क्षमता में काफी सुधार होता है।

प्रकृति पर प्रभाव

- खेतों में केचुए की उपस्थिति पक्षियों की दुर्लभ प्रजातियों में से कुछ को आकर्षित करती है, इसलिए यह पर्यावरण प्रणाली में सुधार करती है।
- भूजल स्तर बढ़ता है।
- मीथेन गैस उत्पादन में कमी आती है।
- यह पानी, उर्वरक और अन्य रसायनों की आवश्यकताओं को कम करता है।

मॉड्यूल समाप्त >>

अन्य व्यष्टि अध्ययन जल्द ही आ रहे हैं